ISSN 2815-8326

प्रेम विशेषांक

हिंदी त्रैमासिक
पहचान
देश से हम, हमसे देश

वर्ष 2 | अंक 3 | जनवरी - मार्च 2024 | पृष्ठ संख्या 32
प्रधान संपादक : प्रीता व्यास

आवरण चित्र - मणि मोहन

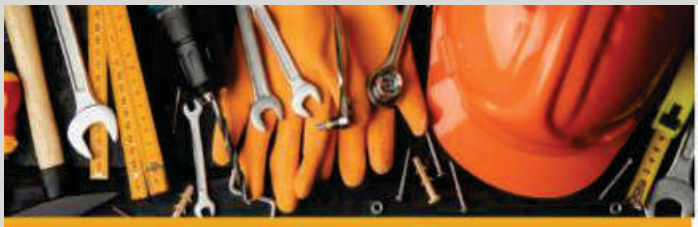

BEST
CONSTRUCTION
BETTER
HOME

ArchPoint Ltd

ARCHPOINT LTD

You Dream, We make the Dreams True!

Our Best Services:

- PROVIDING END-TO-END RESOURCE CONSENT, EPA AND BUILDING CONSENT SERVICES
- FEASIBILITY STUDIES - PRE & POST PURCHASE OF YOUR PROPERTY
- ARCHITECTURAL DESIGNING
- PLANNING & PROJECT MANAGEMENT
- SURVEYING
- GEOTECHNICAL INVESTIGATIONS & REPORTS
- CIVIL ENGINEERING FOR INFRASTRUCTURE DESIGNING
- STRUCTURAL ENGINEERING

engineering new zealand
LICENSED BUILDING PRACTITIONER BUILDING CONFIDENCE
PMI NEW ZEALAND CHAPTER
ADNZ Professional Member

64 21848 552 archpoint.co.nz

GODWIN-AUSTEN

GODWIN-AUSTEN

You Wish, We bring the wishes to Reality!

Our Best Services:

- Subdivisions & Building Construction on Turn Key Basis
- Land and Home Packages
- Design & Build
- 10 Years Master Builder Guarantee
- Auckland Wide Operations

MASTER BUILDERS
PMI NEW ZEALAND CHAPTER

64 21889 918 OR 64 21848 552 godwinausten.co.nz

हिंदी त्रैमासिक
पहचान
देश से हम, हमसे देश

संस्थापक/ प्रधान संपादक
प्रीता व्यास

सलाहकार संपादक
रोहित कृष्ण नंदन

सहयोगी संपादक
माला चौहान

ले आउट/ ग्राफिक्स
Design n Print, India

कवर पेज
मणि मोहन

प्रकाशक
पहचान
आकलैंड, न्यूज़ीलैंड
editor@pehachaan.com

पत्रिका में प्रकाशित लेख, रचनाएं, साक्षात्कार लेखकों के निजी विचार हैं, उनसे प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं. रचनाओं की मौलिकता के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार है. कुछ चित्र और लेखों में प्रयुक्त कुछ आंकड़े इंटरनेट वेबसाइट से संकलित किये गए हो सकते हैं.

दो शब्द

युद्ध की ज़िद ने ना सिर्फ मानवता का संकट पैदा किया बल्कि विश्व की अर्थव्यवस्था को भी हिला दिया. ज़्यादातर देश ऐसे हैं जो महंगाई की मार झेल रहे हैं. दूसरी ओर प्रकृति भी हमें हमारी लापरवाहियों का दंड देने पर तुली हुई है. हम सब क्लाइमेट चेंज का असर साफ़ महसूस कर रहे हैं. दुनिया का तापमान लगभग 1.2 डिग्री सेल्सियस बढ़ गया है. अनुमान बताते हैं कि इस समय दुनिया जिस तरह चल रही है, अगर ऐसे ही चलती रही तो सन 2,100 तक वह 2.4 से 2.7 डिग्री सेल्सियस गर्म होने की दिशा में बढ़ रही है. अगर हमें सुरक्षित रहना है तो इसे 1.5 डिग्री सेल्सियस पर रोकना होगा और इसके प्रयास सरकार के स्तर पर, योजनाओं के स्तर पर होने के साथ ही साथ व्यक्तिगत स्तर पर भी होने ही चाहिए चाहे वह कितने भी कम मालूम होते हों.

बहुत से कटु सत्य हमारे समय का यथार्थ हैं, इनको नकारा नहीं जा सकता. प्रसंगवश मुझे एक संस्मरण याद हो आया. सुल्तान महमूद ग़ज़नवी ने अपने ग़ुलाम अयाज़ से कहा 'मेरी अंगूठी पर कुछ ऐसा जुमला लिखो जिसे मैं ग़म में देखूं तो ख़ुश हो जाऊं और ख़ुशी में देखूं तो ग़मगीन हो जाऊं'.

ग़ुलाम अयाज़ ने लिखा 'ये वक़्त हमेशा नहीं रहेगा,ये वक़्त गुज़र जाएगा'.

वक़्त कभी टिकता नहीं है, गुज़र जाता है, अच्छा हो या बुरा. सो अच्छा था या बुरा वक़्त का वो टुकड़ा जिसे हमने साल 2023 कहा, गुज़र गया. बहुत सी सामाजिक, सांस्कृतिक, पर्यावरणीय, वैश्विक चुनौतियों के साथ और इनसे जुड़ती बहुत सी नई उम्मीदों के साथ हम 2024 में क़दम रख रहे हैं. आप सभी को नव वर्ष की शुभकामनाएं. सबके जीवन में सुख, शांति, समृद्धि रहे. व्यक्ति, समाज, देश, विश्व, पूरी पृथ्वी, पूरा ब्रम्हांड सकारात्मक ऊर्जा से भरा रहे यही कामना है. पहचान को 2022 से आपका साथ और सहयोग मिल रहा है, मिलता रहेगा ये विश्वास है. जुड़े रहिये ताकि 'पहचान' रहे.

प्रीता व्यास

इस अंक में...

पाठकीय प्रतिक्रियाएं		5
आलेख		
एक मैं अनेक मैं	निधि अग्रवाल	6-8
समकालीन हिंदी उपन्यासों में अभिव्यक्त किन्नर संघर्ष	रामेश्वर महादेव वाढेकर	9-12
बसंत पर कविताऐं और शरीर के हीट सेंसर्स	शरद कोकास	13
कहानी		
कमरे में चांद	निवेदिता भावसार	14-15
दो गीत	रोहित कृष्ण नंदन	16
नज़्म	विकास राणा	17
गज़ल		
	सतपाल ख़्याल	18
	बलवान सिंह 'आज़र'	19
	के. पी. अनमोल	20
कविता		
प्रेम कविता	तोषी व्यास	21
एक प्योंली, एक बुरांस	गीता गैरोला	21
1. कि इस रस्म को उलट दूं. 2. कुछ स्मृति कुछ प्रलाप	हनुमंत शर्मा	22
1. एक पल के लिए कृतज्ञ हूं, 2. मैंने कहा, प्यार है तुमसे	माया मृग	23
संस्मरण		
काले देवता	हर्ष वर्धन गोयल	24
आलेख		
कबूतर जा जा जा	वंदना ज्योतिर्मयी	25
विदेशों में हिंदी		
पहली मोहब्बत	दुआ प्रोमिला (न्यूज़ीलैंड)	26
अनुवाद		
मानस रंजन महापात्र की ओड़िया कविता का हिंदी अनुवाद	राधू मिश्र	27
बाल कहानी		
रंग बिरंगे कपड़े	डॉ. हेमंत कुमार	28-29

पाठकीय प्रतिक्रियाएं

‘पहचान’ ने बहुत जल्दी अपनी पहचान बना ली है. शुभकामनाएं.

कमलजीत चौधरी, जम्मू, भारत

बहुत अच्छी पत्रिका है पहचान. समय-समय पर सामाजिक एवं पारंपरिक रचनाएं एवं ज्ञानवर्धक आलेख तथा खेल जगत विज्ञान से संबंधित लेख श्रेष्ठ कवियों की रचनाएं पढ़ने को मिलती हैं और संपादकीय बहुत ही श्रेष्ठ है.

विनीता गुप्ता, छतरपुर, भारत

2023 अक्टूबर-दिसंबर माह में प्रकाशित अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका ‘पहचान’ का प्रत्येक भाग, चाहे आलेख हो या रचना या कहानी, सभी सराहनीय हैं. कवर पेज संस्कृति के अनुकूल बेहद सुंदर है. पहचान टीम को बहुत-बहुत हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं.

लोकेश शर्मा ‘अवस्थी’,
खेड़ली (अलवर) राजस्थान, भारत

आपकी पत्रिका ‘पहचान’ के विगत कई अंक पढ़े, आपकी पत्रिका साहित्य के मापदंडो का मापांक पुन:निर्धरित कर रही है. विभिन्न विधाओं से सुसज्जित यह पत्रिका एक ज्योति पुंज है जो अनेको साहित्यकारों को दमकने का सुअवसर प्रदान करती है. भाषा की सेवा में आपका, आपके दल का यह प्रयास निरंतर दैदीप्यमान रहे ऐसी मनोकामना है.

हर्ष वर्धन गोयल, सिंगापुर

पहचान का जब भी कोई अंक पढता हूं तो लगता है कि विदेश में नहीं भारत में ही कहीं हूं. मैंने अपने ग्रुप में भी इसे शेयर किया है और सभी ‘पहचान’ को पसंद कर रहे हैं. प्लीज़ कीप अप द गुड़ वर्क.

आर. बी. प्रभाकर, टोरंटो

पहचान का अक्टूबर-दिसंबर 2023 अंक भी शानदार रहा. ऐसी स्तरीय और खूबसूरत पत्रिका के लिए आभार. ‘पहचान’ पढ़ कर लगता है स्तरीय पत्रिकाओं का दौर नहीं बीता. इस अंक में चयनित रचनाएं सशक्त और श्रेष्ठ हैं. एक साथ इतनी श्रेष्ठ रचनाओं के आस्वादन का सौभाग्य मिल उठा है. शुभकामनाएं संपादक महोदया प्रीता व्यास जी और पहचान की टीम, आर्ट और ग्राफिक्स भी सराहनीय हैं.

राधवेंद्र सिरोही, हिसार, हरियाणा, भारत

इंटरनेट की विस्मयकारी शक्ति का बहुधा प्रयोग आमोद-प्रमोद के लिए होता है, ऐसी-ऐसी चीज़ें हैं जिन्हें देखते-सुनते नई पीढ़ी की चेतना दूषित हो रही है. इस शक्ति का बहुत बढ़िया उपयोग है ये साहित्यिक पत्रिका. इसका कलेवर ऐसा है जो हमें समय के अपरिवर्तनीय तट से भविष्य के उस नगर में पदार्पण करने की प्रज्ञा प्रदान करता है जो हमारी प्रतीक्षा में रत है. अपने लोक जीवन को सहेजने का आपका श्रम सार्थक हो, सफल हो. कोटिश: शुभकामनाएं.

डॉ. आनंद उपाध्याय, बनारस

एक मैं अनेक मैं

निधि अग्रवाल

अगर मैं आपसे कहूंगी तो आपको शायद यकीन न हो आप इसे किसी विचलित रात का आतंकित सपना समझें किंतु यह अक्षरश: सच है. एक मैं हूं जो यह आलेख लिख रही हूं. एक मैं, ठीक इसी समय पहाड़ पर गिरती बारिश को देख पाने के लिए बेचैन हो उठी हूं. एक मैं, मां भी हूं जो इस ग्लानि में डूबी हूं कि रविवार की सुबह का यह समय मुझे अपने बच्चों के साथ बिताना चाहिए. एक मैं, उन पुस्तकों को खोल-बंद रही हूं जो मित्रों ने बड़े मान और स्नेह के साथ मेरी प्रतिक्रिया हेतु भेजी हैं. एक मैं, उन किताबों को छूकर अभी-अभी लौटी हूं जिन्हें मैंने बड़े चाव और बेसब्री से मंगाया था. एक मैं, बाहर बोलती चिड़िया को उसकी आवाज से न पहचान पाने के लिए अवसाद में हूं. एक मैं, दौड़कर उस चिड़िया की झलक पा लेने को लालायित हो उठी हूं. एक मैं, इस पूरे दृश्य को कागज पर रंग देना चाहती हूं. एक

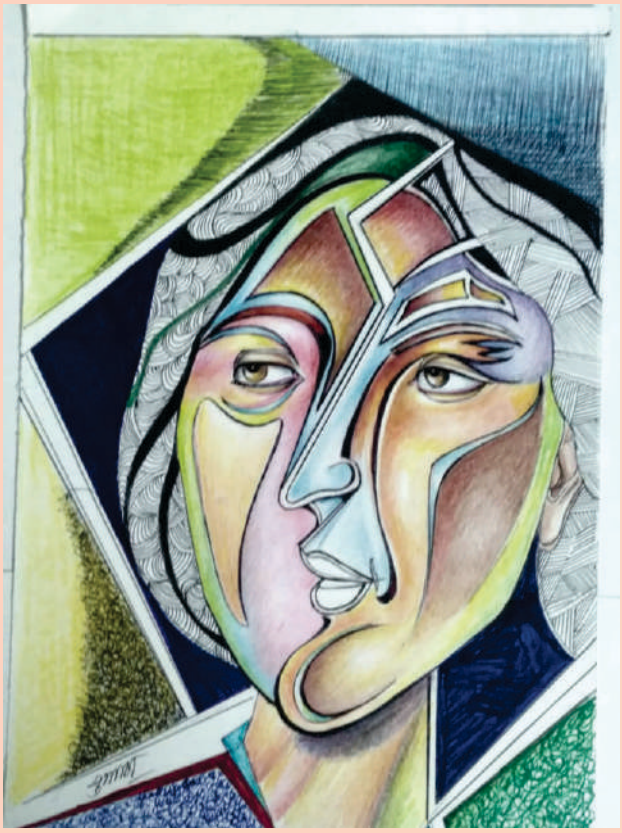

मैं, कमरे की सज्जा परिवर्तन का खाका खींच रही हूं. एक मैं, उन फिल्मों के नाम सहेज रही हूं, जो मैं किसी शांत दिन देखना चाहती हूं. एक मैं, किसी की कही कड़वी बात से उबरने के प्रयास में हूं. एक मैं, मैं को

बचाए रखने के लिए अपने आप से लड़ रही हूं और इन सबके बीच समय की ठीक इसी तह में स्थिर भाव बैठी दिख रही हूं. यह सभी मैं मुझे अपनी-अपनी ओर खींच रहे हैं. मैं आंखे बंद कर लेती हूं और एक जगमगाते फोरलेन पर अनियंत्रित दौड़ती अनगिनत गाड़ियों की लाइट की कोंध मेरी आंखे और सिर दुखाने लगती हैं. अतिव्यस्त सड़कों पर ट्रैफिक कंट्रोलर का होना अत्यंत आवश्यक है. ऐसा ही रचनात्मकता का क्षेत्र भी है. अनेक विचारों को दिशा देने के लिए, उचित समय पर गति और विराम देने के लिए एक इंस्पेक्टर नियुक्त करना जरूरी है क्योंकि ऐसे ही अनेक 'मैं' के साथ सामंजस्य बिठाना ही मेरा और हम सबका सबसे बड़ा संघर्ष है.

हमारे कई वर्जन है. कई बेहद मुखर, कुछ बिल्कुल शांत. सब की अभिरुचि अलग, सब की अपेक्षाएं अलग. नहीं यह स्पलिट पर्सनैलिटी नहीं है जो एक दूसरे से बेखबर अपना रोल सलीके से निभाते हैं. यह एक तन में अनेक मस्तिष्क के सह अस्तित्व का संकट है. हम सरलता से चिह्नित न किए जाने वाले कॉनजॉइंट ट्विंस हैं. कॉनजॉइंट ट्विंस, जिनकी देह के कुछ भाग परस्पर जुड़े होते है किंतु मस्तिष्क अलग अलग होते हैं. अपनी परिपक्व और दृढ़ सोच लिए ये दिमाग एक ही तन के लिए एक ही समय में अलग-अलग निर्णय लेते हैं. अगर यह अनेक मस्तिष्क सिंक में काम न करें तो इनका संघर्ष और अवसाद बढ़ जाता है. अधिकतर कॉनजॉइंट ट्विंस लम्बा जीवन नहीं जी पाते या जितना भी जीते हैं वह सार्थक न होकर तन-मन से जूझते बीत जाता है लेकिन जब-जब दो मस्तिष्क एक दूसरे की सत्ता स्वीकार लेते हैं, अंतर्विरोध समाप्ति हेतु नियम निर्धारित कर लेते हैं तब इस उलझे जीवन की कई ग्रंथियां सुलझ जाती हैं.

चांग और एंग बंकर (1811-1874) सियाम (अब थाईलैंड) में पैदा हुए ऐसे ही जुड़वा भाई थे, जिन्होंने परस्पर सामंजस्य से नियति की इस चुनौती को ध्वस्त करते हुए सुंदर जीवन जिया. उन्होंने लंबी यात्राएं की और सड़क किनारे लोगों का मनोरंजन करती किसी अजूबा जोड़ी से उठाकर,अपनी छवि को, संघर्षों को साझा करते मोटिवेशनल स्पीकर के गरिमामयी पायदान पर पहुंचा दिया. चांग और एंग के जिगर आपस में एक मासंल बैंड से जुड़े हुए थे जिन्हें उस समय अलग करना संभव नहीं था.

उन्होंने कुशलता से व्यापार किया, संपति अर्जित की और विवाह भी किया. 13 अप्रैल, 1843 को, एंग ने सारा येट्स

और चांग ने एडिलेड येट्स से विवाह किया. दोनों के पृथक घर थे जिनमें वह निर्धारित दिनों पर रहते थे. जिसका घर होता था वह भाई 'एक्टिव' और दूसरा 'पैसिव' अस्तित्व का निर्वहन करता था. समय के साथ सारा ने तीन और एडिलेट ने चार बच्चों को जन्म दिया. 1870 में, चांग का दाहिना हिस्सा लकवाग्रस्त हो गया, एंग ने निरंतर चांग की देखभाल की. इसके बावजूद वह अस्वस्थ बना रहा और 1874 तक ब्रोंकाइटिस के कारण सांस लेने में तकलीफ महसूस करने लगा.

17 जनवरी की सुबह, एंग के बेटे ने सोते हुए एंग को जगाकर बताया कि 'अंकल चांग मर चुके हैं.' एंग ने जवाब दिया 'तो फिर मैं जा रहा हूं.' पारिवारिक डॉक्टर को तुरंत बुलाया गया लेकिन चांग की मृत्यु के दो घंटे बाद ही एंग की मृत्यु हो गई. उन दोनों ने 62 वर्षों का जीवन जिया जो उस समय किसी भी संयुक्त जुड़वा के लिए अकल्पनीय था. इसी कारण सियामी जुड़वां शब्द को संयुक्त जुड़वां के पर्याय के रूप में उपयोग किया जाने लगा.

ऐसा ही उदाहरण 28 अक्टूबर, 1951 में जन्में रोनाल्ड ली गैलियन और डोनाल्ड ली गैलियन का भी है जिन्होंने 68 वर्ष का सामंजस्य भरा जीवन जीकर विश्व रिकॉर्ड बनाया और फुटबाल के प्रेमी इन भाइयों ने 4 जुलाई 2020 को इस दुनिया को अलविदा कहकर बताया कि अराजकता पर विजय पा, कैसे नियति को बदला जा सकता है.

ऐसे अनेक उदाहरण हैं जहां यह समझा गया कि अलग-अलग दिशा में भागने या अलग होने के प्रयास में कुछ न कुछ क्षति तो अवश्य होगी तब वे परस्पर समन्वय स्थापित कर निर्णय लेते हैं और अपेक्षाकृत कम संघर्ष का जीवन जीते हैं.

इनसे गुजरते हुए मैं सोचती हूं कि बाहरी दुनिया को समझने से पहले मुझे भी अपने भीतर के अनेक मैं को समझना होगा. यह ऐसा कठिन भी नहीं बस स्वीकार्यता और जागरूकता का खेल है. अमेरिकी गणितज्ञ जॉन नैश की तरह यथार्थ और भ्रम को चिह्नित कर लेने का खेल.

इनके कनेक्शन को समझते हुए निर्णय लेने होंगे. जो मैं मात्र भ्रम है उन्हें पूर्णत: ख़ारिज कर देना है. इनमें से कुछ बेहद कमजोर तंतुओं से मुझसे जुड़े हैं उन्हें विलगाते हुए मुझे कोई दर्द, कोई हानि नहीं होगी, बस मेरा भार कम हो जाएगा. लेकिन कुछ तंतु आपस में इस कदर उलझे हैं या एक दूसरे पर आश्रित हैं कि उनको पृथक करने के प्रयास में उनका अस्तित्व खतरे में आ सकता है. मुझे उचित समय पर उनकी प्राथमिकताओं को बदलते रहना होगा. एक को फोकस में ले अन्यों को कुछ समय के लिए अदृश्य मान लेना होगा.

हमारे भीतर बैठे इन विभिन्न 'demons' के बीच मैत्री कराने के बाद, इनके स्वामित्व का समय निर्धारित करने के बाद ही हम अपने जीवन में कुछ सफलता और शांति पा सकते हैं. अपने परिवार, दोस्तों, सहकर्मियों और पड़ोसियों के साथ मानसिक शांति और सौहार्द बना सकते हैं और जब यह अनेक मस्तिष्क राष्ट्र और विश्व के संदर्भ में एक साथ आते हैं तब भी कुछ बड़ा और सुंदर करने के लिए क्या यही कुशल संयोजन नहीं मांगते जिसकी मिसाल बरसों पहले मछुआरों के गांव में जन्में दो अनपढ़ भाई चांग और एंग बंकर ने कायम की थी. आखिर हम सब विभिन्न नागरिकता वाले कॉनजॉइंट ट्विंस ही तो हैं जिनका संरक्षण कई अदृश्य मांसल बैंड्स से परस्पर जुड़ा हुआ है. ■

समकालीन हिंदी उपन्यासों में अभिव्यक्त किन्नर संघर्ष

रामेश्वर महादेव वाढेकर

समकालीन साहित्य का अध्ययन करने के पश्चात् समझ आता है कि स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, मुस्लिम विमर्श, अल्पसंख्यक विमर्श, वृद्ध विमर्श, किन्नर विमर्श आदि पर गंभीर चर्चा हुई है. वर्तमान समाज में किन्नर को हिजड़ा, खुसरो, अली, छक्का आदि नाम से पुकारा या पहचाना जाता है. किन्नर के चार प्रकार हैं बचुरा, नीलिमा, मनसा, हंसा. बचुरा वर्ग के किन्नर वास्तविक हिजड़े होते हैं. वे जन्म से न स्त्री होते हैं ना पुरुष. नीलिमा वर्ग में वे हिजड़े आते हैं, जो किसी परिस्थितिवश या कारणवश स्वयं हिजड़े बन जाते हैं. मनसा वर्ग में वे हिजड़े आते हैं जो मानसिक तौर पर स्वयं को हिजड़ा समझने लगते हैं. हंसा वर्ग में वे हिजड़े आते हैं, जो किसी यौन अक्षमता की वजह से स्वयं को हिजड़ा समझने लगते हैं. किन्नर समाज विश्व के हर क्षेत्र में समाहित हैं. वे मनुष्य ही हैं, सिर्फ़ उनमें प्रजनन क्षमता न होने से समाज हीन नजर से देखता है. हिंदी साहित्य में शुरुआती दौर में पाण्डेय बेचन शर्मा, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', शिवप्रसाद सिंह, वृंदावन लाल वर्मा आदि ने किन्नर समाज की समस्या पर लिखा किंतु समस्या का हल वर्तमान में भी नहीं.

हिंदी साहित्य में किन्नर समाज की समस्या पर अनेक उपन्यास लिखे गए और वर्तमान में भी लिखे जा रहे हैं. प्रमुख उपन्यासों में 'यमदीप' नीरजा माधव, 'मैं भी औरत हूं' अनुसुइया त्यागी, 'किन्नर कथा, 'मैं पायल' महेंद्र भीष्म, 'तीसरी ताली' प्रदीप सौरभ, 'गुलाम मंडी' निर्मल भुराड़िया, 'प्रतिसंसार' मनोज रूपड़ा, 'पोस्ट

बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा' चित्रा मुद्गल आदि. उपरोक्त उपन्यासों का अध्ययन करने के पश्चात किन्नर समाज की त्रासदी, संघर्ष समझ आता है. किन्नर समाज की प्रमुख समस्या में शैक्षिक समस्या, बहिष्कृत समस्या, पारिवारिक समस्या, विस्थापन समस्या, आवास समस्या, रोजगार समस्या, देहव्यापार समस्या, वेश्या समस्या,यौन हिंसा समस्या आदि है. इन समस्याओं के साथ किन्नर समाज वर्तमान में भी संघर्ष कर रहा है. वर्तमान में किन्नर समाज के संदर्भ में कानून है किंतु अस्तित्व में कुछ नहीं. वे आज भी खुद की पहचान समाज में निर्माण नहीं कर सके. समकालीन उपन्यासों में किन्नर समाज की विभिन्न कठिनाइयों एवं उनके संघर्ष को संवेदनात्मक स्तर पर प्रमुखता से उठाया गया है. इन्हीं संवेदना एवं संघर्ष को सहजने की कोशिश हम करेंगे.

शैक्षिक संघर्ष

किन्नर के ज़िंदगी में जन्म से संघर्ष शुरू,मृत्यु तक जारी. मां-बाप खुद की संतान को स्वीकार करने की मानसिकता में नहीं, ऐसा क्यों ? यह वर्तमान में चिंतन का विषय है. बचपन में शारीरिक बदलाव होने के कारण अनेक परिवार के सदस्य बच्चे को अस्पताल लेकर जाते हैं. बच्चा किन्नर है, पता चलने के पश्चात स्वीकारने की स्थिति में कोई नहीं रहता, उसे किन्नर बस्ती में छोड़ा जाता

है या जान से मारने की कोशिश की जाती है. किन्नर बस्ती में वह बड़ा तो होता है, किंतु शिक्षा से वंचित. उसने पढ़ाई करने की ठानी भी तो समाज व्यवस्था पढ़ने नहीं देती. किन्नर समाज के शैक्षिक संघर्ष के संदर्भ में नीरजा माधव 'यमदीप' उपन्यास में कहती है,'माता, किसी स्कूल में आज तक किसी हिजड़े को पढ़ते, लिखते देखा है? किसी कुर्सी पर हिजड़ा बैठा है? मास्टरी में, पुलिस में, कलेक्ट्री में, किसी में भी, अरे! इसकी दुनिया यही है, माताजी कोई आगे नहीं आएगा कि हिजड़ों को पढ़ाओ, लिखाओ, नौकरी दो, जैसे कुछ जातियों के लिए सरकार कर रही है.'

'नंदरानी' के माध्यम से नीरजा माधव ने किन्नर समाज का शैक्षिक संघर्ष बयां किया है. आज भी अनेक माताएं किन्नर संतान होने के बावजूद पढ़ाना चाहती हैं किन्तु पुरुष सत्ता के सामने कुछ नहीं कर पातीं. वर्तमान में कई 'नंदरानी' शिक्षा के लिए संघर्ष कर रही हैं. तकरीबन 2014 तक किन्नर समाज का लिंग ही निश्चित नहीं था, शिक्षा तो बहुत दूर. कोई सरकार उनकी तरफ ध्यान नहीं देती. जिस तरह स्त्री, पुरुष को पढ़ने का संवैधानिक अधिकार है,उसी प्रकार किन्नर को भी है. वर्तमान में कानून है, सिर्फ अस्तित्व में नहीं. कुछ गिने-चुने किन्नर संघर्ष करके पढ़े हैं, किन्तु उन्हें अच्छे पद पर नियुक्ति नहीं मिलती. उनके साथ भेदभाव किया जाता है. जब तक समाज की सोच बदलेगी नहीं, तब तक किन्नर समाज का संघर्षमय जीवन जारी रहेगा,कानून के बावजूद.

बहिष्कृत प्रथा के विरुद्ध संघर्ष

किन्नर को खुद का परिवार नहीं स्वीकारता, समाज तो बहुत दूर. संविधान में सभी लोगों की तरह किन्नर समाज के भी मूलभूत अधिकार हैं. किंतु किन्नर समाज के मूलभूत अधिकार का हनन होता है. उन्होंने न्याय मांगने की कोशिश भी की तो न्याय नहीं मिलता, अन्याय निरंतर होता है. वर्तमान में भी समाज उन्हें बहिष्कृत कर रहा है. इज्जत से जीने नहीं देता. चित्रा मुद्गल 'पोस्ट बॉक्स नंबर 203 नाला सोपारा' उपन्यास में बहिष्कृत प्रथा के संघर्ष संदर्भ में कहती हैं, 'कभी-कभी मैं अजीब सी अंधेरी बंद चमगादड़ों में अटी सुरंग में स्वयं को घुटता हुआ पाता हूं. बाहर निकलने को छटपटाता मैं मनुष्य तो हूं ना? कुछ

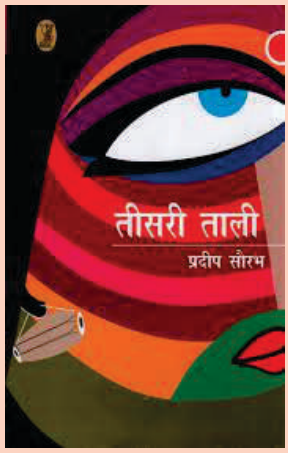

कमी है मुझमें, इसकी इतनी बड़ी सज़ा.' 'विनोद' के माध्यम से बहिष्कृत संघर्ष चित्रा मुद्गल ने साझा करने की कोशिश की है. वर्तमान में किन्नर समाज त्रासदी में जी रहा है, सामाजिक मानसिकता के वजह से. वह किन्नर है ये उसका दोष नहीं. वह मनुष्य ही है, स्त्री की कोख से पैदा हुआ. समाज को उन्हें सम्मान देना चाहिए, बहिष्कृत नहीं करना चाहिए. उनके साथ प्रेम से, मिलजुलकर रहना होगा, तभी उनमें जीने की आस निर्माण होगी.

पारिवारिक संघर्ष

किन्नर का संघर्ष समाज से नहीं, परिवार से शुरू होता है. विश्व में चिकित्सा विज्ञान ने बहुत प्रगति की है. किन्नर संतान को परिवार से दूर करना,यह उसका उपाय नहीं. उसके भविष्य के संदर्भ में सोचने की जरूरत है. समाज क्या कहेगा रिश्तेदार क्या सोचेंगे? हमारी इज्जत का क्या होगा? आदि प्रश्न गौण हैं, खुद की संतान के सामने. पारिवारिक संघर्ष के संदर्भ में महेंद्र भीष्म 'किन्नर कथा' उपन्यास में कहते है, 'सामाजिक परिस्थितियों, खानदान की इज्जत मर्यादा,झूठी शान के सामने अपने हिजड़े बच्चे से उसके जन्मदाता हर हाल में छुटकारा पा लेना चाहते है.' लेखक ने 'सोना' नामक पात्र के माध्यम से किन्नर का संघर्ष दिखाने की कोशिश की है. उपन्यास का पात्र 'जगत सिंह' अपने खुद के बेटे 'सोना'को जान से मारने की कोशिश करता है, क्योंकि वह किन्नर है. वर्तमान में कई 'सोना' परिवार के प्रेम को तरस रहे हैं. किन्नर को समाज ने अपमानित किया तो ज्यादा दु:ख नहीं होता, किंतु परिवार ने मुंह फेर लिया, तो बहुत दु:ख होता है. वर्तमान में कई परिवार किन्नर संतान को परिवार का हिस्सा नहीं

मानते. किसी में अधिकार नहीं मिलता. पारिवारिक समारोह में इच्छा होकर भी जा नहीं पाता. सिर्फ़ यादों में जीता है. उन्हें कोई सहारा नहीं देता. हर तरफ से मानसिक और शारीरिक शोषण होता है. परिवार के सदस्य को मानसिकता बदलने की जरूरत है. वे अपनी संतान की वेदना नहीं समझेंगे,तो कौन समझेगा? मनुष्य को ऐसे संवेदनशील विषय पर चिंतन की जरूरत है. विस्थापन संघर्ष वर्तमान किन्नर समाज की भीषण समस्या है विस्थापन. किन्नर खुद घर से निकल जाते है,तो कभी उसे जबरन निकाला जाता है. दोनों अवस्था में संघर्ष ही है. बच्चा किन्नर है, समझ आने के पश्चात उस पर का प्रेम खत्म होता है परिवार एवं समाज का. उसके साथ परिवार के सदस्य, रिश्तेदार बुरा बर्ताव करते है. हर दिन के मानसिक और शारीरिक त्रासदी से परेशान होकर जान तक देता है. परिवार ने छोड़ने के पश्चात समाज ज्यादा वेदना देता है. जीना मुश्किल करता है. मजबूरी में किन्नर समुदाय का डेरा खोजने की कोशिश करता है. वहां भी उसका मुखिया के द्वारा शोषण ही होता रहता है. विस्थापन संघर्ष के संदर्भ में महेंद्र भीष्म 'किन्नर कथा' रचना में कहते है, 'प्रत्येक हिजड़ा अभिशप्त हैं, अपने ही परिवार से बिछुड़ने के दंश से. समाज का पहला घात यही से उस पर शुरू होता है. अपने ही परिवार से, अपने ही लोगों द्वारा उसे अपनों से दूर कर दिया जाता है. परिवार से विस्थापन का दंश सर्वप्रथम उन्हें ही भुगतना होता है.' वर्तमान में भी किन्नर समाज का विस्थापन संघर्ष दिखाई देता है. वे सुरक्षित दिखाई नहीं दे रहे. वे बेघर हैं उन्हें कोई सहारा नहीं देता. मजबूरी का फायदा उठाते है, मनुष्य के रूप में रहनेवाले जानवर. समाज उनके लिए भले ही कुछ न करे, चलेगा किंतु उनकी ज़िंदगी से न खेले. जिस दिन किन्नर समाज को सही में न्याय मिलेगा, तभी लोकतंत्र अस्तित्व में है, यह किन्नर को महसूस होगा.

आवास संघर्ष

किन्नर बेघर है वर्तमान में भी. उन्हें रहने के लिए भी कोई किराए पर घर नहीं देता. किन्नर के रूप में जन्म लेना कोई गुनाह नहीं है. वर्तमान में किन्नर को विवाह करने का कानूनन अधिकार है, किंतु समाज मान्य नहीं करता. किसी व्यक्ति ने किन्नर से विवाह करने की हिम्मत की, तो उसे जीने नहीं देते. यह आज की वास्तव परिस्थिति है, इन्हें नकारा नहीं जा सकता. वर्तमान में भी किन्नर को शिक्षित कॉलोनी में रहने घर नहीं मिलता. मजबूरन उन्हें गंदी समझी जानेवाली बस्ती में रहना पड़ता है. कुछ गलती न होने के बावजूद भी पुलिस प्रशासन द्वारा उन पर आरोप लगाए जाते हैं, अपमानित किया जाता है. वहां से भी बेदखल किया जाता है. आवास संघर्ष के बारे में

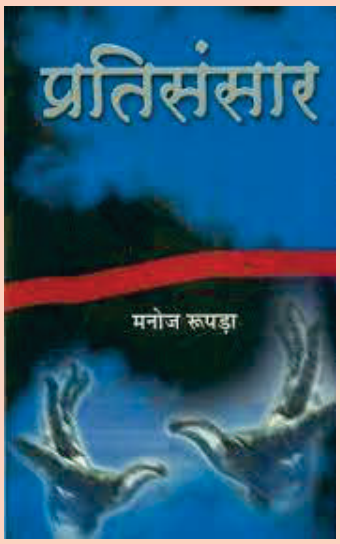

प्रमोद मीणा कहते है, 'कुछ हिजड़ा परिवार की तरह समूह में भी रहते हैं,लेकिन रहने के लिए एक सुरक्षित घर खोजना हिजड़ों के लिए हमेशा एक चुनौती बनी रहती है. ज्यादातर मकान मालिक हिजड़ों को मकान किराए पर देते नहीं हैं. मकान मालिकों की बेरूखी से तंग आकर बहुत से हिजड़ों को गंदी, कच्ची बस्तियों में रहने पर मजबूर होना पड़ता है और वहां से भी उन्हें पुलिस प्रशासन द्वारा बेदखल किया जाता रहता है.'

इक्कीसवीं सदी में भी अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति को अनेक शहर के प्रतिष्ठित समझे जाने वाले क्षेत्र में मकान नहीं मिलता. पैसों के कारण नहीं, जाति, धर्म के कारण फिर वर्तमान में किन्नर समाज की क्या हालत होगी, यह समाज में झांककर देखने से समझ आता है. किन्नर संघर्ष कानून बनाने से ही समस्या का समाधान नहीं होने वाला.

रोजगार संघर्ष

उच्च शिक्षित होकर भी युवाओं के पास काम नहीं हैं. किन्नर समाज को व्यवस्था ने पढ़ने नहीं दिया. कुछ किन्नर पढ़े-लिखे हैं, वे भी बेरोजगार हैं. शिक्षित व्यक्ति कुछ ना कुछ काम करके जीवन जीता है किंतु किन्नर को शिक्षित होकर भी कोई काम नहीं मिलता. मजबूरी में वे रेलगाड़ी, सिग्नल्स, बाजार, बच्चे के जन्म, विवाह आदि स्थान पर जा रहे हैं. वहां उन्हें कोई प्रेमभाव से नहीं मिलता, वे निरंतर अपमानित होते रहते हैं. संघर्ष करके पढ़े-लिखे किन्नर उच्च पद पर कार्यरत होना चाहता है, समाज में बदलाव लाने,

उनमें उच्च पद पर नियुक्त होने की पात्रता भी है, किंतु किन्नर होने से वहां तक वे नहीं पहुंच पाते. मजबूरी में अपनी पहचान छिपाकर पद हासिल करते हैं. किन्नर समाज के रोजगार संघर्ष के संदर्भ में प्रमोद मीणा कहते है, 'अपनी पहचान छिपाकर ये यदि कहीं रोजगार पा भी लेते हैं तो इनका हिजड़ा होने का खुलासा होने पर नियोक्ता इन्हें नौकरी से निकाल देता है. कार्यस्थल पर साथी, सहकर्मियों और मालिक आदि द्वारा इनके साथ मौखिक, दैहिक और यौनिक दुर्वव्यवहार आम है और जिसके लिए इन्हें कहीं से न्याय भी नहीं मिल पाता. इनके चाल-चलन को कार्यस्थल की शुचिता के लिए खतरा मानकर इन्हें ही नौकरी से निकाल दिया जाता है.'

संविधान में सभी को समान अधिकार है, फिर भी उनके साथ अन्याय क्यों ? यह चिंतन का विषय है. सिर्फ़ किन्नर समस्या पर लिखा साहित्य पढ़कर कुछ नहीं होगा, समस्या को समझकर खुद से कार्य करने की जरूरत है. कालांतर से समाज में भी बदलाव जरूर आएगा.

वेश्या वृत्ति एवं यौन हिंसा के विरुद्ध संघर्ष

किन्नर का जीवन वेश्या स्त्री से कहीं ज्यादा बदतर है. वे कहीं भी सुरक्षित नहीं. उनके साथ प्रेम भाव से कोई वार्तालाप नहीं करता. शिक्षा का अभाव, रोजगार की समस्या आदि का फायदा उठाकर उन्हें वेश्या व्यवस्था में खींचा जा रहा है. किन्नर अनेक बीमारियों का शिकार बन रहे हैं. इन समस्याओं से वे निरंतर संघर्ष करते आए हैं. वर्तमान में भी कर रहे हैं. वर्तमान में किन्नर के समक्ष यौन हिंसा भीषण समस्या के रूप में खड़ी है. कारण है सामाजिक असुरक्षा और नीच मानसिकता. किन्नर कहीं सुरक्षित नहीं है. करीबी रिश्तेदार भी जबरदस्ती करता है. उन्होंने चिल्लाकर भी बताया तो कोई विश्वास नहीं रखता, किन्नर को ही दोषी ठहराया जाता है. दोषी व्यक्ति के खिलाफ गुनाह दाखिल करने किन्नर जाते हैं, उनकी कोई रिपोर्ट नहीं लिखता. वे हर दिन की पीड़ा से परेशान होकर नशा करने लगे हैं. उन्हें खुद की ज़िंदगी से नफ़रत होनी लगी है. यौन संघर्ष के संदर्भ में चित्रा मुद्गल 'पोस्ट बॉक्स नंबर 203 नाला सोपारा' उपन्यास में कहती है, 'किवाड़ ठीक से बंद नहीं किया उसने या उसके सिटकनी चढ़ाने से पहले ही अपने चार दोस्तों के साथ बिल्लू किवाड़ खोल के कमरे में घुस आए. पूनम जोशी ने आपत्ति प्रकट की, कपड़े बदलने है, वे कमरे से बाहर जाएं. भतीजे ने पूनम जोशी को दबोच लिया. कहते हुए, वे डरे नहीं, कपड़े वे बदल देंगे उसके, बस वे उनकी ख्वाहिश पूरी कर दे.'

विधायक का भतीजा 'बिल्लू' किस तरह 'पूनम जोशी' से बर्ताव करता है, यह चित्रण लिखिका ने प्रस्तुत किया है. वर्तमान में कई 'पूनम जोशी' हवस की शिकार बन रही हैं. मजबूरी का फायदा उठाया जा रहा है. किन्नर पर अत्याचार होने के पश्चात भी उसे ही दोषी ठहराया जा रहा है. उसे न्याय नहीं मिलता समाज, न्याय व्यवस्था से. न्याय के लिए वर्तमान में भी वे संघर्ष कर रहे हैं. उन्हें इंसान के रूप में स्वीकार करना,उनके लिए सबसे बड़ा न्याय होगा.

निष्कर्ष

वर्तमान में किन्नर समाज की समस्या पर चर्चा हो रही है. किन्नर के अधिकार को लेकर वैश्विक स्तर पर भी प्रयास हो रहे हैं. भारत में भी उन्हें तृतीय लिंग के रूप में मान्यता दी है. भारत में किन्नर समाज की आबादी लगभग पचास लाख है, तब भी वे हशिए पर रखे गए हैं. किन्नर समाज पर वर्तमान में भी साहित्य लिखना जारी है, लोग पढ़ भी रहे हैं, सिर्फ़ आचरण में नहीं ला रहे. जब वे विचार आचरण में लाएंगे तब किन्नर समाज सामान्य लोगों की तरह जीवन बिता सकेगा. किन्नर समाज की समस्या के तरफ सरकार को ध्यान देने की नितांत आवश्यकता है. जिस दिन किन्नर समाज को समाज के हर क्षेत्र में प्रतिनिधित्व मिलेगा, तभी किन्नर समाज पर लिखित साहित्य का उद्देश्य सफल होगा. ■

Photo Source : Google

बसंत पर कविताऐं और शरीर के हीट सेंसर्स

शरद कोकास

बसंत का मौसम आते ही कविगण बसंती हवाओं को देह पर महसूस करने लगते हैं, मस्तिष्क का सोमेटो सेंसरी एरिया जाग जाता है और वह कविता लिखने वाले भाग को प्रेरित करता है कुछ लिखो भाई और फिर कागज़ पर कलम से लिखा जाता है ओ बसंती पवन पागल, ना जा रे ना जा, रोको कोई. वैसे आजकल हम डाइरेक्ट मोबाइल पर लिखने लगे हैं लेकिन दिमाग़ में प्रोसेस यही होती है.

मणि मोहन

हमें सर्दी, गरमी, बसंती हवाओं या प्रेमचंद की कहानी 'पूस की रात' वाली ठंडी हवाओं का अहसास किस तरह होता है, आपको ज्ञात है? हर इंसान की त्वचा में तापमान भांपने वाले सेंसर होते हैं. इन्हें हीट सेंसर कहते हैं. इन्हीं हीट सेंसर्स की वजह से हमें सर्दी-गरमी और सुहाने मौसम का पता चलता है. अगर यह सेंसर नहीं होते तो हमें मौसम का पता ही नहीं चलता और हम सर्दी गर्मी का अनुभव ठीक से नहीं कर पाते. फिर न हम वर्षा ऋतु पर कविताएं लिखते न बसंत ऋतु पर.

कुछ लोगों में यह सेंसर कान में ज्यादा होते हैं, ऐसे लोगों को आप ठंड के मौसम में कान में मफ़लर लपेटे देख सकते हैं. कुछ लोगों में कान के अलावा शरीर के अन्य हिस्सों में यह सेंसर कम या अधिक मात्रा में हो सकते हैं. आप लोगों ने देखा होगा किसी को कान में ज़्यादा ठंड लगती है तो किसी को पांवों में. इसका कारण यही है कि शरीर के जिस हिस्से में यह सेंसर अधिक होते हैं ठंड वहीं अधिक लगती है. इसके अलावा शरीर में तापमान के सेंसर्स की संख्या हर इंसान में अलग-अलग हो सकती है. किसी को ठंड अधिक लगती है किसी को गर्मी अधिक लगती है, इसका संबंध ताकत या कमज़ोरी से नहीं है बल्कि यह भी इन्हीं सेन्सर्स की वज़ह से होता है.

शरीर में आंतरिक गर्मी को नियंत्रण करने वाली प्रणाली मुख्यत: मटर के आकार के हाइपोथैलेमस द्वारा नियंत्रित की जाती है. यहां शरीर की ताप नियंत्रक प्रणाली होती है. यह नसों से फीडबैक तो लेता ही है, साथ ही इसके अपने भी गर्मी के संसूचक होते हैं. ये शरीर में गर्मी का प्रबंधन करते हैं. यदि शरीर को सर्दी लगती है तो हाइपोथैलेमस कंपकंपी शुरु करने का संकेत भेजता है. मांसपेशियां इस प्रक्रिया में फड़कनी शुरु हो जाती हैं, जिससे गर्मी पैदा होती है. यदि शरीर को गर्मी लगती है तो त्वचा के पास रक्त नलिकाओं को फैलने का संकेत भेजा जाता है ताकि ज्यादा खून सतह तक पहुंच सके. इसके बाद पसीने के जरिए गर्मी निकलती है. इंसानों के लिए यह एक तरह का प्राकृतिक वातानुकूलन है. गर्मी के दिनों में लू से बचें. रचनाकार इस बात को बेहतर जानते हैं कि जो बचेगा वही तो रचेगा और बसंत का मौसम उल्लास और आनंद का मौसम है, गर्मियों के आगमन का सूचक. न केवल मौसम के प्रति बल्कि व्यवस्था के प्रति अपनी प्रतिरोध की ताकत को भी बढ़ाते रहें और कविताऐं भी लिखते रहें. ■

कमरे में चांद

निवेदिता भावसार

रात थी. गहरी सी. नींद बस पलकों पर ही थी. सांसें अपनी रिदम से चल रही थीं के अचानक ज़ोर की आवाज़ आई - भाड़-भाड़, जैसे किसी ने घबरा के दरवाज़ा पीटा हो.

नींद ने चौंक के जल्दी से अपना लिहाफ ओढ़ा और बिना कुछ कहे अंधेरों में गायब हो गई.

आवाज़ें और तेज़ और तेज़ हो गई थीं जैसे बिजली गिरी हो कहीं. अचानक पानी का रोशन सा रेला मेरे कमरे में दाखिल हो गया. मैंने दरवाजा खोला, देखा देहलीज पर भीगा हुआ सा चांद खड़ा ठिठुर रहा था. पहचानती थी मैं उसे. कई बार अपनी खिड़की से उसे देखा था. शांत, चुप सा, यहां वहां भटकता सा. मैंने एहतियात से आस-पास देखा और धीरे से उसे कहा 'आ जाओ'.

कितना खूबसूरत था चांद ! कितना !!

'ऐसी तेज बारिशों में कहां भटकते रहते हो?' मैंने उसे तौलिया देते हुए कहा, 'कम से कम एक बरसाती ही ले लिया करो. और कहां थे इतने दिन से ?'.

वो मुस्कुरा दिया. 'कहीं नहीं, एक पेड़ पर एक घोंसले में रह रहा था.'

अबके मुस्कुराने की बारी मेरी थी.

'अच्छा चाय पियोगे ? रुको बनाती हूं'.

वो कुछ कहने को हुआ फिर चुप हो गया.

यहां वहां देखते हुए बोला, 'तो यहां रहती हो तुम ?'

अचानक मुझे अपने अस्त-व्यस्त से कमरे का ख्याल आया.

'हां.छोटा है ना बहुत'. मैंने उसे चाय देते हुए कहा, 'पर काम चल जाता है'.

'हुं', उसने हुंकारा सा भरा.

'तुम्हारा अच्छा है ना, कोई लिमिट ही नहीं, जहां देखो वहां तक आसमान ही आसमान. ना छत ना दीवारें. कोई रोकने वाला नहीं, टोकने वाला नहीं. कभी किसी पेड़ पर अटक गए, कभी बादलों पर सवार हो गए. जब चाहे, जहां चाहे, भटकते रहो.'

'हां. पर कभी-कभी छतों की, दीवारों की बहुत ज़रूरत होती है. कई बार लगता है दीवारों से पीठ टिकाए देर तक खड़ा

रहूं. रुक जाऊं. आंखें उठाऊं तो यकीन हो के मेरे सर पर भी कोई छत है. कोई तो खिड़की हो, कोई तो दरवाजा हो जिसे इस दुनिया के मुंह पर बंद कर सकूं', कहते-कहते उसकी आवाज भर्रा सी गई.

मैंने जरा हिचकते हुए उसके कंधे पर अपना हाथ रख दिया. उसने अपने ठंडे गाल मेरी उंगलियों से सटा दिए. मैं थोड़ी सिहर सी उठी. अपना हाथ खींचते हुए बोली, 'तो ठीक है ना, चलो अपना-अपना कमरा बदल लेते हैं. रह लो दीवारों में.'

वो हंसा, 'मैं तो रह लूंगा तुम रह पाओगी? अनंतता भी किसी श्राप से कम नहीं.'

'अरे! ऐसा क्या हो गया डायलॉग पे डायलॉग मारे जा रहे हो. ऐसे तीखे-तीखे. झगड़ा-वगड़ा हो गया क्या किसी से?'

वो फिर मुस्कुरा दिया.

हाय कितनी गहरी थी उसकी आंखें!' अरे ये क्या?'

'क्या?'

'ये निशान कैसा?'

'अरे, क क कुछ नहीं. कुछ नहीं,' वो खुद को छुडाते हुए बोला.

'अरे कुछ कैसे नहीं? देखने दो. मैंने उसका चेहरा हाथ में ले लिया. आंखों के जरा सा नीचे ये...येएए....क्या हुआ हां? किसी ने मारा क्या तुम्हें? हाये, मैंने अभी तक कैसे नहीं देखा?'

वो मेरे सीने से लग गया.

'क्या हुआ हां... क्या हुआ?'

बिजली ने मेरे पेड़ को जला दिया. मेरी चिड़िया, उसके बच्चे, सब, सब जल गए.

'हे ईश्वर! हे ईश्वर!'

'चुप... चुप.'

बहुत देर तक वो सिसकता रहा. मैं उसे सहलाती रही.

चांद. ऐ चांद?'

'ऊंऊं '...

कुछ सूझ ही नहीं रहा था क्या कहूं. ऐसा क्या दिलासा दूं. ऐसा क्या कहूं. ऐसा क्या करुं?

'अरे सुनो चाय और पियोगे?'

'ना'

'अरे थोड़ी सी, जरा सी,' मैं उठने को हुई. उसने मेरा हाथ पकड़ के रोक लिया.

'सुनो'

'हां'

'कभी-कभी यहां आ सकता हूं?' उसने अपनी बड़ी-बड़ी भोली सी आंखों से मुझे देखते हुए कहा.

'हां ना. क्यों नहीं? तुम्हारे आने से तो ये कमरा आसमान से भी सुंदर हो जाता है यार. बस सूरज को मत बताना. जानते हो ना जलखुकड़ा है.'

वो हंस दिया.

'चलो एक-एक चाय और'

'नहीं, रहने दो, सुबह हो जाएगी.'

'अरे ना, ना. एक-एक बस. एक-एक और.'

पर वो नहीं माना, जैसे ही जाने को हुआ. देखा नींद कान लगाए वहीं दरवाजे पर खड़ी थी.

वो मुस्कुरा रही है.चांद उसे देख नज़र नीची किये तेज-तेज कदमों से चला गया.

'हम्म, मैं आ जाऊं? नींद ने पूछा.

मैंने गुस्से से उसे देखा.

नहीं अब आ के क्या करोगी? सुबह हो गई है.

'अरे! सुबह के ख्वाब सच्चे होते हैं मेरी जान. कहो तो चांद का सपना ले आऊं. उसने जोर-जोर से हंसते हुए कहा.

'नहीं चाहिए. निकलो, निकलो यहां से,' मैंने उसे ढकेलते हुए दरवाजा बंद कर दिया.

कमीनी नींद. बड़ी आई, झूठे सपनों को सच बताती है, हुंह.

चलो अपने लिए चाय बना लूं. ■

रोहित कृष्ण नंदन

1. सदियां बीत गयीं

कंगना, झुमके, पायल, बिंदिया
देखे सदियां बीत गयीं.
राह तेरी तकते-तकते मनमीत
ये अँखियां रीत गयीं.

पहलू में तेरे आकर अक्सर
गम हल्का कर लेते थे,
मन में दफन पड़ी बातों को
जी भर कर हम जीते थे,
कितना कुछ था पास हमारे
तू था हर पल संग हमारे,
छोड़ के जब से दूर गया है
तब से आंखों का नूर गया है,
हार गये गम से तेरे
अश्कों की नदियां रीत गयीं,
कंगना, झुमके, पायल, बिंदिया
देखे सदियां बीत गयीं.
राह तेरी तकते- तकते मनमीत
ये अँखियां रीत गयीं. ■

2. ये कालिमा छांटिए

प्रेम को जातियों में न यूं बांटिए.
दिल की दुनिया से ये कालिमा छांटिए.

हो हमारा ये दिल बस सबसे बड़ा
क्या हुआ गर जो है कोई छोटा बड़ा
जिंदगी की घड़ी हैं महज चार दिन
घुट-घुट के इनको न यूं काटिए.
प्रेम को जातियों में न यूं बांटिए,
दिल की दुनिया से ये कालिमा छांटिए.

जो बातें हमें तुम सिखाते रहे
किताबों में हर पल पढ़ाते रहे,
कभी राधा का चर्चा सुनाते रहे
कभी मीरा दीवानी बताते रहे,
अब ये दिल जब धड़कने लगा प्रेम में
सब हमें ही गलत क्यों बताते रहे,
दो दिलों को न ऐसे यूं बांटिए.
दिल की दुनिया से ये कालिमा छांटिए. ■

विकास राणा

1. मेरे गीतों की तुम मैना

जिसके गले में सुर का गहना
सोना ओढ़ा चांदी पहना.
तितली-तितली जिसके नैना
मेरे गीतों की तुम मैना.
सुर-संगीत में हो पगलाई
किसी पहाड़ की बदली चुराई,
और अब रावी में है बहना.
मेरे गीतों की तुम मैना.
नदियां चलती-चलती जाएं
तेरे दाएं तेरे बाएं,
बजते जाएं बंसी छैना.

मेरे गीतों की तुम मैना.
सातों सुर में गाती जाए
एक ही धुन में धूनी रमाए,
मेरी ग़ज़ल का मतला है ना
मेरे गीतों की तुम मैना.
मेरे सीने से निकले हाय
दिल की धड़कन कटती जाए,
चुप का नेज़ा कितना पैना.
मेरे गीतों की तुम मैना.
ताज़ा फूल गुलाब दहन है
मेरा उदास-उदास सुख़न है
दिन है तुम्हारा मेरी रैना
मेरे गीतों की तुम मैना.
एक मुआफ़ी नज़्म के बदले
फूल तलाफ़ी ज़ख्म के बदले
मैंने कहा अब तुम भी कहना.
मेरे गीतों की तुम मैना. ■

2. नामकरण

हां मै इक लफ़्ज़ सोचूंगा
तुम्हारा नाम रखने को
हो कोई हामिला सा लफ़्ज़
जो बस खुशबू उगाता हो
जो खिल-खिल मुस्कुराता हो
कि जिस से धूप आती हो
कि जो छांव ले आता हो
दुआ सा लफ़्ज़ हो वो इक
दवा के काम आता हो
हां जिस से सांस आती हो
कि जो धड़कन बढ़ाता हो
करे कूज़ागरी का काम
कि जो जुगनू बनाता हो
हर इक तासीर हो उस में
जो खुद हर रंग उगाता हो
अभी हर लफ़्ज़ का माना
लुग़त से सीख लोगी तुम
या फिर दुनिया बतायेगी
समाअत का असर होगा
तो कुछ संगत सिखायेगी
मगर इक दिन वो आयेगा
लुग़त को फेंक दोगी तुम
झटक दोगी सभी अल्फ़ाज़
मुकर जाओगी अपने हाफ़िज़े से
मुझे बोलोगी, बोलोगी मुझे तुम
मैं क्या हूं कौन हूं मुझ को बताओ ना
मुझे गुंचा बुलाओ ना
मुझे गुंचा बुलाओ ना. ■

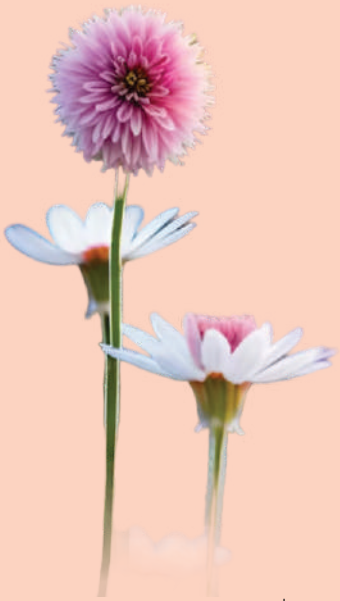

सतपाल ख़्याल

1.
मैं न जीता हूं, तू न हारी है
ज़िंदगी तुझसे जंग ज़ारी है.
कितनी हल्की हैं मेरी सब ग़जलें
एक रोटी भी इनसे भारी है.
फ़र्ज़ पूरा किया चराग़ों ने
आगे सूरज की ज़िम्मेदारी है.
मीर पत्थर जो रोज़गार का है
इश्क़ से भी ज़्यादा भारी है.
इसको भी फ़न समझ रहे हैं लोग
नंगे होना भी अदाकारी है?
मुख़्तसर है सफ़र मुहब्बत का
पास बैठी हुई सवारी है.
हां मेरी याद उस दुपट्टे पर
इक चमकती हुई किनारी है.
एक मिट्टी के रंग कितने हैं
कौन माली है किसकी क्यारी है.
वक्त क्या है 'ख़याल' सुन हमसे
रात दिन चलने वाली आरी है.

2.
जो लेकर लौ चले थे वो कहां हैं?
दियों के क़ाफ़िले थे वो कहां हैं?
उजालों की हिफ़ाज़त करने वालो
दिए जो जल रहे थे वो कहां हैं?
वो किन झीलों पे बरसे हैं बताओ
जो कल बादल उड़े थे वो कहां हैं?
हमारी प्यास ने पत्थर निचोड़े
कुंए जो नक़्शे पे थे वो कहां हैं?
ए पानी बेचने वालो बताओ
जो राहों में घड़े थे वो कहां हैं?
लहू के लाल धब्बे सबने देखे
जो पत्थर बांटते थे वो कहां हैं?
हवा में तैरती हिंसा की ख़बरें
कबूतर जो उड़े थे वो कहां हैं?
'ख़्याल' अब खाइयां है नफ़रतों की
कि पुल जो जोड़ते थे वो कहां है?

3.
यहां मुश्किल है अब मेरा गुज़ारा, अब मैं चलता हूं
समझ में आ गया है खेल सारा, अब मैं चलता हूं
ख़यालों के किसी जंगल में यादों का कोई लश्कर
किसी इक याद ने मुझको पुकारा, अब मैं चलता हूं
ये धारे, कश्तियां, मांझी, समन्दर याद रखूंगा
नज़र आने लगा मुझको किनारा, अब मैं चलता हूं
बदन को ओढ़कर जीता रहा बरसों बरस तक मैं
ये चोला था पुराना सो उतारा, अब मैं चलता हूं
मिला तू सबसे हंसके अपनी महफ़िल में, सिवा मेरे
समझ में आ गया तेरा इशारा, अब मैं चलता हूं
कहां से हूं, कहां का हूं, कहां पे आके बैठा हूं
गिरा है फ़र्श पर अर्शों का तारा, अब मैं चलता हूं
'ख्याल' अब ऊब सी है दिल में, घर में और दफ़्तर में
बहुत अरसा घुटन सी में गुज़ारा, अब मैं चलता हूं.

4.
आंख में तैर गये बीते ज़माने कितने
याद आये हैं मुझे यार पुराने कितने.
चंद दानों के लिए क़ैद हुई है चिड़िया
ए शिकारी ये तेरे जाल पुराने कितने.
ढल गया दर्द मेरा शेरों के सांचों में तो फिर
खिल गये फूल दरारों में न जाने कितने.
एक है फूल, कई ख़ार, हवाएं कितनीं
इक मुहब्बत है मगर इसके फ़साने कितने.
ग़म के गुंबद पे, कलस चमके हैं यादों के कई
दफ़न हैं देख मेरे दिल में ख़ज़ाने कितने.
बात छिड़ती है मुहब्बत की तो उठ जाते हो
याद आते हैं मेरी जान बहाने कितने.
वो मुहल्ला, वो गली, और गली का वो मकां
याद आते हैं मुझे बीते ज़माने कितने.
सच को सूली पे चढा देते हैं दुनिया वाले
इस ज़माने के हैं दस्तूर पुराने कितने.
बात की जब भी उजालों की,चरागों की 'ख्याल'
आ गये लोग मेरे घर को जलाने कितने.

बलवान सिंह 'आज़र'

1.
घर से मैं दश्त की वीरानी अलग रखता हूं
काम मुश्किल है ब-आसानी अलग रखता हूं.
तब मिरी ज़ात में कुछ भी नहीं होता है नुमू
अपनी इस ख़ाक से जब पानी अलग रखता हूं.
एक जैसे नहीं होते हैं यहां दो मंज़र
सुब्ह से शाम की हैरानी अलग रखता हूं.
है क़बा तेरी अलग मेरी क़बा से जैसे
तेरी उर्यानी से उर्यानी अलग रखता हूं.
मुझको होती है तलब सिर्फ़ तिरे बोसे की
दूसरे होंठों से पेशानी अलग रखता हूं.
मेरी सुल्तानी तो दुनिया तिरे ही जैसी थी
हां मगर बे-सर-ओ-सामानी अलग रखता हूं.
यूं ही दस्तक नहीं देती मिरे दर पर ताबीर
ख़्वाब की तुमसे निगहबानी अलग रखता हूं.
जिस्म की तीरगी है वो ही ज़माने वाली
मैं तो बस रूह की ताबानी अलग रखता हूं.
मुख़्तलिफ़ हैं मिरी ख़ुशियां भी किसी से आज़र
ये भी सच है कि परेशानी अलग रखता हूं.

2.
हवा का शोर अगर कान में नहीं आता
मैं इतनी दूर बयाबान में नहीं आता.
मैं अपनी जीत से वाकिफ़ अगर नहीं होता
अकेला हश्र के मैदान में नहीं आता.
पुकारा था मिरे हम-ज़ाद ने मुझे वरना
बग़ैर नाव के तूफ़ान में नहीं आता.
कभी-कभी तो उसे इतना सोच लेता हूं
मिरा वजूद मिरे ध्यान में नहीं आता.
ख़बर नहीं थी मुझे कूज़ा-गर भी है सय्याद
मैं रूह ले के यूं ज़िंदान में नहीं आता.
दुबारा आंख की जानिब उसे ले आता हूं
वो दोस्त जो मिरी पहचान में नहीं आता.
मिरे वजूद में अब रात भी नहीं होती
सहर का ज़िक्र भी इम्कान में नहीं आता.
किसी भी ज़ाविए से देख ले कोई आज़र
फ़लक किसी के भी विज्दान में नहीं आता.

3.
ऐसा नहीं है चाक घुमाता नहीं हूं मैं
लेकिन जो बना है वो बनाता नहीं हूं मैं.
बिखरे पड़े रहते हैं मिरी ख़ाक के ज़र्रे
ख़ुद को किसी तरतीब में लाता नहीं हूं मैं.
तामीर नहीं होता है अब आंख में कुछ भी
क्यूं ख़्वाब के मलबे को हटाता नहीं हूं मैं.
सब देखते हैं तंग निगाहों से मिरी सम्त
जितना हूं किसी को नज़र आता नहीं हूं मैं.
फ़ुर्सत के सिवा काम नहीं है मुझे कोई
अपने सिवा कुछ और कमाता नहीं हूं मैं.
कुछ लोग मिरे साथ सफ़र में नहीं यूं भी
चलते हुए रफ़्तार बढ़ाता नहीं हूं मैं.

4.
बातिन से मिरे उसको सरोकार बहुत है
वो एक बदन मेरा तलबगार बहुत है.
आती है मुसलसल कोई मानूस सी आवाज़
इक तुर्फ़ा तमाशा पस -ए -दीवार बहुत है.
सहरा की तरफ़ यूं ही नहीं आता कोई पांव
मजनूं तिरी ज़ंजीर में झंकार बहुत है.
ज़िंदा नहीं है यूं भी ज़माने में मुहब्बत
इस दिल में कोई है जो गुनहगार बहुत है.
क्यूं याद किये जाता हूं घर-बार को आज़र
बाज़ार से निकलूं तो ये दुश्वार बहुत है.

के. पी. अनमोल

1.
छत पर बैठे-बैठे तुमसे जीभर बतियाने के बाद
खिल उठता हूं, जैसे पत्ते बारिश थम जाने के बाद.
पानी तन को धो देता है, मन को धोती है पूजा
मेरा तन-मन धुल जाता है तेरे मुस्काने के बाद.
तुमको पाकर मेरा चेहरा खिल-खिल उठता है ऐसे
जैसे बच्चा खिल उठता है मोबाइल पाने के बाद.
पेड़ पे बैठे पंछी खुलकर हंसते-गाते रहते हैं
मैं भी तुझमें रह जाऊंगा दुनिया से जाने के बाद.
मेरे जीवन की यह बगिया फूलों से भर उट्ठी है
यानी मैं रंगीन हुआ हूं तेरे आ जाने के बाद.
हाथ पकड़कर चलना तेरा सुख देता है भीतर तक
हाथ पकड़कर चलते रहना अक्सर ही खाने के बाद.
जीवन की अल्बम के सारे फ्रेम हैं वो अनमोल जहां
साथ खड़े हैं मिलकर हम दुनिया से टकराने के बाद.

2.
बस उसी के रंग में डूबे हुए हैं
ज़िंदगी के रंग में डूबे हुए हैं.
वो बहुत खुशरंग लगती है हमें सो
हम उसी के रंग में डूबे हुए हैं.
एक ही में डूबने की चाह थी और
एक ही के रंग में डूबे हुए हैं.
देख पाते हैं वो केवल एक ही रंग
जो किसी के रंग में डूबे हुए हैं.
ये जहां सुनता है चीख़ें और हम तो
ख़ामुशी के रंग में डूबे हुए हैं.
उस खुशी के वास्ते शुकराना तेरा
जिस खुशी के रंग में डूबे हुए हैं.
इश्क़ तो अनमोल है इक बंदगी, हम
बंदगी के रंग में डूबे हुए हैं.

3.
हम लोग जो पले हैं परेशानियों के बीच
पाएं सुकून किस तरह आसानियों के बीच.
तारों के बीच चांद खड़ा है कुछ इस तरह
राजा खड़ा हो जैसे कई रानियों के बीच.
उनका गणित न तुमको समझ आ सकेगा दोस्त
जिनको मुनाफ़े होते रहे, हानियों के बीच.
अब दान, जान की तरह निकलेगा देखिए
कंजूस फंस गया है कई दानियों के बीच.
रख दे तू काश मुझको बनाकर सुरीली धुन
संतों के मुंह से निकली हुई बानियों के बीच.
मन का फ़क़ीर दूर रहेगा जहान से
उसका गुज़ारा होगा नहीं ज्ञानियों के बीच.
'अनमोल' कैसे खुद को बनाकर रखेंगे आप
दुनिया-जहान की इन्हीं नादानियों के बीच.

4.
हों जिसपे फूल, कोई ऐसी डाल कर दे मुझे
निगाह फ़ेर कभी और कमाल कर दे मुझे.
मैं एक धार हूं दरिया की जिसपे पहरा है
तुझी से आस लगी है, बहाल कर दे मुझे.
नज़र तलाश रही है जो इक हसीं मंज़र
उसे तू सामने रख दे, निहाल कर दे मुझे.
महक उठेगी मेरे तन की ख़ाक या मौला!
वतन के हक़ में कभी इस्तेमाल कर दे मुझे.
अंधेरी रात की सूरत उजालने के लिए
तलब है जिसकी, वही इक मशाल कर दे मुझे.
मैं खोज लाऊं समन्दर से सोनमछली को
किसी ग़रीब के हाथों का जाल कर दे मुझे.
मैं इस जहान में 'अनमोल' होके रह जाऊं
हुनर के मोतियों का एक थाल कर दे मुझे.

तोषी व्यास

प्रेम कविता

जिनके जीवन में प्रेम
कुछ कम होता है
वे लिखते हैं कविताएं
प्रेम पर.
खोजते हैं अपने प्रेमी को,
प्रेमिका को,
उन्हीं कविताओं में कहीं.
विचलित होते हैं तो बनती हैं सहारा
वही प्रेम कविताएं.
जो खो देते हैं प्रेम जीवन में
वे लिखते हैं कविताएं
प्रेम पर.
करते हैं जीवंत अपने प्रेम को
कविता से,
बंधा जाती हैं ढांढस
वही प्रेम कविताएं.
और जिनके जीवन में होता है प्रेम सदैव,
वे नहीं लिखते कविताएं
प्रेम पर.
वे हो जाते हैं
साक्षात
प्रेम कविता.

गीता गैरोला

एक प्योंली, एक बुरांस

जिस दिन भी चाहेगा कोई
दे दूंगी उसको
चौखंभा के पीछे से निकला
पूर्णिमा का चांद,
आंगन के कोने में खिले
आड़ू के बैंगनी फूल,
मोनॉल के रंगीन परों के साथ
रूपिन के बर्फीले पानी में
बहा दूंगी सांसें
दो चार ही बची हों चाहे,
वापसी करूंगी
हेमंत में झरी पत्तियों के रिक्त स्थान में
तुम्हारे पांच अपने पांच तत्वों के साथ,
कहीं ऊंचे पहाड़ों में खिलेंगे
दोनो
इसी वसंत में
एक प्योंली
एक बुरांस बनकर.

हनुमंत शर्मा

1. कि इस रस्म को उलट दूं

घर तुम्हारा भी था
घर मेरा भी था.
मेरे हिस्से में
खेल और खिलौने थे
बिस्तर पर चाय थी
टेबल पर खाना था
धुले हुये कपड़े थे
आने-जाने, खाने-पीने, बोलने-सुनने की आजादी थी
मतलब एक इंसान से ज्यादा कुछ था.
तुम्हारे हिस्से में
चूल्हा-चौका था
ये करो, वो ना करो वाली हिदायतें थीं
खिड़कियां थी मगर दरवाज़े नहीं थे.
मै वंशधर था, वारिस था
तुम लाड़ली होकर भी धन थी मगर वो भी पराया.
मैं बड़ा था
तुम छोटी थीं.
लेकिन ये तुम्हारा बड़प्पन था
जो एक बेताल को अपने कंधो पर बिठाये रहीं.
मैं बुरा नहीं था.
मैंने वही सीखा था जो मैंने देखा था
तब जो अक्ल घास चरने गयी थी
अब जब वापस लौटी है
तो पछतावे की परछाइयों तले बैठकर जुगाली करती है.
आज भी मेरी जिम्मेदारियों का दायरा फोन तक सिमटा है
तुम आज भी मेरे हिस्से का फर्ज़ और कर्ज़
अपना समझ का चुका रही हो.
आज भी जब तुम कलाई पर भावों से भरा धागा बांधती हो
तो एक हूक पलट आती है
कि इस रस्म को उलट दूं
और तुम्हारी कलाई में उसे बांधकर
तुम्हारे कदमों में
भीतर से खाली होने तक झुका रहूं. ■

2. कुछ स्मृति कुछ प्रलाप

स्मृति
मानो
यातना गृह में एक सुराख,
कभी धूप का टुकड़ा सरक आता है
कभी चांद नज़र आ जाता है.
स्मृति
के डीप फ्रीजर में
सब कुछ रहता है यथावत
जैसे अभी भी नहीं गुजरा
गुजरा हुआ सब.
स्मृति
है यू तो परछाई
लेकिन मन ऐसे लिपटता है
जैसे सघन अमराई.
स्मृति
स्वप्न की जुड़वा
यानी दबी इच्छाओं की दूब की नोक
जो अप्राप्य को प्राप्य करने की लालसा में
रह रह कर चुभती है
रह रह कर सहलाती है.
स्मृति
अकेले नहीं मरती
उसके साथ
हमारे वो अहसास भी मर जाते हैं
जो हमारे जिंदा रहने के गवाह थे. ■

माया मृग

1. एक पल के लिए कृतज्ञ हूं

उस एक पल से बुनी चादर
और ढंक दिए सब दुख
परदे में रहें दुख तो भेद नहीं रहता सुख और दुख में.
मां कहती थी सुख सूखे होते हैं दुख गीले
जब धूप तेज हो दुखों को परदे में रखना.
उस पल को उठाकर रख दिया पेड़ पर
हरे पत्तों के बीच हरा रहेगा हमेशा.
सींचना पेड़ की जड़ को होता है
पत्तियां खुद ही हो जाती हैं पानीदार,
हरापन बचाए रखना बची रहेगी नमी खुद ही.
कुछ था जो ढंका रहा हमारे बीच
तमाम खुलेपन के बाद भी,
परदे में रख दी हैं सब परदादारियां
खुले में दिखता है खुलापन
जो दिखता नहीं वह दिखाने से क्या दिखेगा?
उस पल पर पड़े हैं अब भी कितने परदे.
दो पल का ही है जीवन, सुना है
एक तुम्हारे साथ बीता,
दूसरा बीत जाएगा पहले को सोचते हुए.
उस पल को बो दिया है मिट्टी में
अब इसमें उगेगी एक उम्र
मिट्टी बीज नहीं खाती, मां कहती थी हमेशा.
हवा, पानी, मिट्टी, आसमान और रोशनी
क्या-क्या नहीं बनाया उस पल से
एक पल लगा जिसे जाते हुए
एक पल के लिए कृतज्ञ हूं तुम्हारे प्रति
मैं दूसरे पल की कामना क्यूं करूं? ■

2. मैंने कहा, प्यार है तुमसे

मैंने कहा, तुमसे प्यार है
लो, तुम्हारी हुई
धरती बिछ गई दूर तक,
आओ! पेड़ की टहनियां चहक उठीं
हरे पत्तों की हनक लिए
सहेज लो, सब तुम्हारा.
नदी का भरा मन उफन-उफन आया.
मैंने धरती को खोदा
तांबा खोजा, लोहा, सोना और जाने क्या-क्या.
पेड़ ने नहीं गिराये जो
वे तोड़ लिए फल टोकरियां भर-भर.
नदी के किनारे बैठा चुनता रहा सूखी मछलियां
और अनुमान में घूमती रही वे भी
जो आ गई हैं खींचे जा रहे भारी हुए जाल में.
मैंने कहा प्यार है तुमसे
तुम संभाल रहे हो अपने भीतर का तांबा, लोहा, सोना
और कुछ कच्चे, कुछ अधपके शब्द
तुम चुप हो
मेरी आंखों में मछलियां उतर आईं
नहीं पता पानी में हैं अभी कि मरकर सूखी हुई.
एक मित्रघाती समय में
पता नहीं क्या सोचते हैं
दूर तक फैली धरती, बाहें फैलाये पेड़, बहती नदी
और देर से चुप .... तुम! ■

काले देवता

हर्ष वर्धन गोयल

यह उन दिनों की बात है जब मैं मलेशिया में कार्यरत था, मुझे अपने कार्यालय के द्वारा सायबर जाया में एक परियोजना पर काम करने का अवसर मिला था. परिवार से कोसों दूर मैं वहां पर अकेला था क्योंकि बच्चे की पढ़ाई व पत्नी का कार्यक्षेत्र सिंगापुर में होने के कारण मेरा परिवार मलेशिया में स्थानांतरित नहीं हो सका. अत: मैं निरंतर प्रयासरत था कि मैं किस प्रकार वापस सिंगापुर में कार्य ढूंढ़ सकूं. हालांकि मुझे मलेशिया में किसी प्रकार की कोई समस्या नहीं थी फिर भी परिवार सिंगापुर में होने के कारण मुझे हर सप्ताहांत में वापस आना पड़ता था और पुन: वापस मलेशिया जाना पड़ता था. इस विवशता पर मेरा कोई वश नहीं था. इसी उपापोह में कई माह का समय व्यतीत हो गया. मैं निरंतर सिंगापुर की किसी परियोजना में कार्य की तलाश कर रहा था. अंतत: ईश्वर की कृपा से, थोड़े से प्रयासों के बाद मुझे वापस सिंगापुर में कार्य मिल गया. मैं वापिस सिंगापुर आने के लिए बहुत उत्साहित था.

किंतु इस बीच एक घटना घटित हुई जो मेरे मन मस्तिष्क पर अभी भी सचित्र अंकित है. मैंने नया नियुक्ति पत्र मिलते ही, अपना त्यागपत्र मानव संसाधन विभाग में डाल दिया. संयोगवश उन्हीं दिनों मेरे उच्च अधिकारी का भी स्थानांतरण हुआ था. कुछ ही दिनों में मेरे नाम नए उच्च अधिकारी का ईमेल आया कि वे मुझसे वार्तालाप करना चाहते हैं . मेरे लिए यह एक सामान्य सी बात थी. अमेरिका में बैठे मेरे उच्च अधिकारी ने हालचाल जानने के बाद प्रश्न पूछा 'तुमने त्यागपत्र क्यों डाला ? क्या कारण है ?'

मैंने सारी वस्तुस्थिति का यथावत वर्णन करते हुए बताया कि मेरा बच्चा सिंगापुर में पढ़ रहा है और उसका विद्यालय स्थानांतरण संभव नहीं. कुछ इधर-उधर की बात करने पर उन्होंने पूछा,'हर्ष कोई और कारण तो नहीं ?'

मैंने कहा, 'नहीं श्रीमान, कोई और कारण नहीं है, यही एकमात्र कारण है, मुझे यहां किसी प्रकार की और कोई असुविधा नहीं है.'

'क्या मैं साफ-साफ पूछूं? मैं एक अफ्रीकन व्यक्ति हूं और क्योंकि मैं एक काला व्यक्ति हूं क्या इसलिए तुम त्यागपत्र देना चाहते हो?' उनकी आवाज में अब गंभीरता थी. मैं बड़ा अचंभित हो गया. कोई व्यक्ति ऐसे कैसे सोच सकता है कि हम उसके रंग के आधार पर उसका चयन करते हैं. उन्होंने मुझसे कहा कि साफ-साफ बताओ, तुमने त्यागपत्र क्यों दिया ? क्या काला अधिकारी होने पर तुम्हें कोई आपत्ति है ?

अब मेरे सब्र का बांध टूट चुका था. मैं मानव को पहले मानव समझता हूं और कोई मुझ से इस प्रकार की बात करे, यह मेरे लिए बड़ी ही अचरज की बात थी. मैंने कहा, ' श्रीमान यदि मैं अपने मित्रों का, अपने अधिकारियों का, अपने सहयोगियों का चुनाव उनके रंग से करता हूं तो यह मेरे लिए बहुत बड़ा पाप होगा. हमारे कई प्रमुख देवी-देवता काले रंग के हैं. क्या आप सोचते हो कि हम रंगों के आधार पर मनुष्य का चयन कर सकते हैं जबकि हमारे अपने कुछ देवता एकदम काले हैं ?'

मैं उनसे दूरभाष पर बात कर रहा था परंतु अब मैं उनकी आवाज में एक विशेष परिवर्तन महसूस कर सकता था, झल्लाहट से भरा स्वर शांत हो चुका था. मुझे अनुभूति हुई कि मेरा यह उत्तर सुनकर वे बहुत अच्छा महसूस कर कर रहे थे. उन्होंने कहा, ' नहीं हर्ष मैं तो मात्र ऐसे ही पूछ रहा था. '

उन्हें यह जानकर कर बड़ी प्रसन्नता हुई कि मेरी सोच रंगभेद में बिल्कुल भी विश्वास नहीं करती. उन्होंने मेरे सुखद भविष्य की कामना के साथ वार्तालाप समाप्त करते हुए कहा कि भविष्य में कभी भी उनकी आवश्यकता पड़े तो अवश्य संपर्क करना.

मैंने सोचा कि क्या एक अच्छे विकसित देश की पहचान केवल संसाधनों के विकास तक सीमित है? मानवीय सोच का विकास नहीं होना चाहिए? हमें मानव को पहले मानव नहीं समझना चाहिए? तत्पश्चात उसका रंग, धर्म, देश एवं भाषा इत्यादि को देखना चाहिए. मुझे गर्व है अपनी उच्च संस्कृति पर, जहां हमें जन्म से ही इस तरह की कुंठित मानसिकता में फंसने नहीं दिया गया. मुझे मन ही मन अपनी संस्कृति और संस्कारों पर और अधिक गर्व हो उठा. ■

कबूतर जा जा जा

वंदना ज्योतिर्मयी

अपने दिल्ली आवास में पिछले हफ़्ते जब बीमार पड़ी तो एक तो इस बात से चिढ़ हो रही थी कि मेरी छुट्टियां ज़ाया हो रही थीं और दूसरे कि बालकनी में कबूतरों ने काफ़ी आना-जाना, गंदा करना, फड़-फड़ाना, गुटरगूं मचा रखा था. इन कबूतरों को कोसते हुए भी ये ख़्याल आता रहा कि कैसी बुरी हूं मैं जो इन भोले-भाले पक्षियों से चिढ़ रही हूं.

ख़ुशफ़हमी थी मुझे कि रंगबिरंगे पक्षियों के चित्र-वीडियो देख प्रसन्न होता मेरा मन वाक़ई सब जीवों से प्रेम करने वाला है, पर इन विचारों पर ग़ौर करने पर पता लगा कि सब दिखावे की बातें हैं. फिर आग में घी का काम किया काम में हाथ बटाने वाली लड़की विमला की बात ने, जब उसने कहा 'दीदी, आपके यहां नहीं होने पर हर हफ़्ते आपका घर साफ़ करती हूं, कोई परेशानी नहीं है मुझे क्योंकि भाई (मेरा बेटा) तो बड़ा सहेज के रखते हैं सब, पर इन कबूतरों ने जान ले रखी है. इतने बड़े घर को साफ़ करने में जितना समय नहीं जाता, इनकी गंदगी साफ़ करने में उसका दुगुना समय लगता है.' ये सुन कर मिज़ाज और तल्ख़ हो उठा था.

मन करे कि ऐसा क्या कर दिया जाये कि इन कबूतरों की ज़ात इधर ना आये. फिर अपने इस विचार पर बड़ा क्रोध आया. लगा कि ये पक्षी तो बस गंदा कर देते हैं जगहों को पर हम इंसान की औलादें, जो नकारात्मक नज़रिए ऐसे फैलाते हैं कि लोगों के मन-मस्तिष्क की सफ़ाई ही नहीं हो सकती. तो हम जैसों का क्या हो? कबूतर कम से कम विश्‍व भर में शांति के प्रतीक तो हैं और हम इंसान प्रतीकों का निर्धारण करते रह जाते हैं, पर ख़ुद करते क्या हैं?

कबूतर संदेशवाहक हुआ करते थे राजाओं और शासकों के, और साथ ही कबूतरबाज़ी भारतीय संस्कृति का हिस्सा बन गई. कबूतरों को प्रशिक्षित किया जाने लगा. मुग़ल काल में हुए शासक बाबर ने अपने संस्मरण में कबूतरों के खेल का ख़ूब ज़िक्र किया है. संदेशवाहक ही नहीं, मालिक के वफ़ादार भी होते थे कबूतर (अब भी होंगे). ये दूर की यात्रायें बड़ी क़ाबिलियत से कर लेते थे क्योंकि रास्तों की समझ इन्हें ख़ूब होती थी. महाभारत और रामायण जैसे ग्रंथों में इनकी चर्चा है. वेदों में भी कई श्लोक हैं जो कपोत यानी कबूतरों पर लिखे गये हैं. इन्हें सहानुभूति का पात्र तो माना ही गया है, इनकी रक्षा भी की जानी चाहिए ऐसा भी माना गया है.

ऋग्वेद में कपोत यानी कबूतर को दूत माना गया है जो निम्नलिखित श्लोकों में इस प्रकार वर्णित है :

देवां: कपोतं इषितो यदिच्छन्दूतो निर्ऋत्या इदमांजगामं ।
तस्मां अर्चाम कृणवांम निष्कृंतिं शं नों अस्तु द्विपदे शं चतुंष्पदे ॥
ऋचा कपोतं नुदत प्रणोदमिषं मदंन्त:परि गां नंयध्वम् ।
संयोपयंन्तो दुरितानि विश्वा हित्वा न ऊर्जं प्र पतात्पतिंष्ठ: ।।

कहीं तो इन कबूतरों को शुभ माना गया है, तो कहीं अत्यंत अशुभ. राल्फ टी. एच. ग्रिफ़िथ पहले यूरोपियन हैं जिन्होंने वेदों का अंग्रेज़ी रूपांतरण किया है और उन्होंने कहा है "A dove, is regarded as an ill-omened bird and the messenger of death, once flown into the house."

दूसरी तरफ़ ब्रिटेन दूसरे विश्व युद्ध की समाप्ति के 50 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में एक सिक्का जारी किया गया जिसपर कबूतर ज़ैतून के पत्ते लिए हुए है.

ख़ैर, जब ज़िक्र हो रहा है कबूतरों से होने वाली परेशानियों का तो मैं उस के ज़िक्र से भटकना नहीं चाहती.

पर्यावरण के दृष्टिकोण से शहरों में कबूतरों की बढ़ती आबादी स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र पर प्रतिकूल असर डाल सकती है, जिससे उस इलाक़े में पलने-बढ़ने वाले पक्षियों की प्रजातिओं पर असर पड़ सकता है.

कहते हैं कि कबूतर बहुत सी बीमारियों जैसे एवियन इनफ़्लुएंज़ा या साल्मोनेला के वाहक भी होते हैं. ये अलग तरह के माइट्स, परजीवी आदि फैला सकते हैं. इनकी बीट मानव तथा दूसरे जीवों के लिए घातक हो सकती है. अम्लीय प्रकृति की इनकी बीट भवन, मूर्तियों और तमाम आधारभूत संरचनाओं के लिए भी समस्या है. इनका कहीं भी घरौंदे बना देने की आदत रोज़मर्रा की ज़िंदगी में परेशानी खड़ी करती है. कई शहरों में कबूतरों से बचने के उपक्रम के तहत कई चीज़ें की जा रही हैं जैसे ताक पर जालियां लगाना, स्पाइक्स लगाना आदि.

आज की दुनिया दूध का दूध और पानी का पानी करने, यूं कहिए कि हर कुछ के परखच्चे उड़ा डालने वाली हो गई है. मसलन, अगर दूध के सौ फ़ायदे हों तो भी उसके नुक़सान भी आज हज़ार गिनाये जा सकते हैं. अजब बात ये है कि हम निष्कर्ष पर कहीं पहुंचें या ना पहुंचें, द्वंद्व की मन:स्थिति में भरपूर रहते हैं.अब मेरा प्रश्न ये है कि मैं कैसे सोचूं इन कबूतरों को? जालियों से बालकनी बंद कर के इस परेशानी भरी सोच से आज़ाद हो जाऊं, या कबूतरों से होने वाले तमाम नुक़सान की ही बातें करती रहूं, कबूतरों को दाने-पानी डालने वालों को अपना दुश्मन समझूं? ■

दुआ प्रोमिला (न्यूज़ीलैंड)

पहली मोहब्बत

कहते हैं पहली मोहब्बत
बड़ी पाकीज़ा होती है,
बड़ी मासूम होती है,
और वो मोहब्बत होती है मां की मोहब्बत,
मां की दुआएं अर्श तक जाती हैं,
उसके पांव में जन्नत है,
उसकी गोदी में अजीब सा सुक़ून है.
ज़ुबान से पहला लफ्ज़ भी मां ही निकलता है.
फिर उसी पहली मोहब्बत को,
उसी जन्नत को,उसी सुक़ून को,
उंगली पकड़ कर
क्यों छोड़ आते हो वृद्धाश्रम,
क्यों दुनियां के मेले में खोकर
भूल जाते हो
अपनी पहली मोहब्बत,
क्यों वो अमृत सा दूध,
क्यों वो बिस्तर की नमी,
क्यों वो काजल का टीका,
क्यों रातों के रतजगे
मां के भूल जाते हो?
जिसने छोड़ दी सारी दुनियां,
सारी खुशियां तुम्हारी मोहब्बत में,
उस पहली मोहब्बत को
क्यों बेगानों में छोड़ आते हो?
क्यों उन आंखों की वीरानी
तुम समझ नहीं पाते
और उसकी मोहब्बत के एवज़ में
चंद काग़ज़ के टुकड़े फेंक आते हो.
अरे, तुम तो क़ाबिल ही नहीं हो
उस मोहब्बत के,
वो गीता के श्लोक सी मोहब्बत,
वो क़ुरआन की आयत सी मोहब्बत,
उसे तुम
ग़ैरों के हाथों में क्यों कर सौंप आते हो?
सुना है बड़ी मन्नत से मांगती है रब से मां
दामन फैलाकर बेटों को,
खुदाया!
अगर यही है मोहब्बत पहली
तो दुआ करती हूं,
हर मां बांझ हो जाये
जवानी कर दी ख़र्च,
बच्चों की परवरिश में
क्या इसलिए कि
बुढापा वृद्धाश्रम में नीलाम हो जाये? ■

मानस रंजन महापात्र की ओड़िया कविता का हिंदी अनुवाद

मानस रंजन महापात्र

अनुवादक : राधू मिश्र

मानस रंजन महापात्र (1960) ओड़िया भाषा के एक प्रख्यात कवि, अनुवादक व संपादक हैं. पांच कविता संकलन, दो कहानी संकलन एक उपन्यास तथा पचास से अधिक अनुवाद पुस्तकों के लेखक महापात्र लंबे समय तक राष्ट्रीय पुस्तक न्यास (एन.बी.टी.) नई दिल्ली के राष्ट्रीय बाल साहित्य केन्द्र के प्रमुख रहे. सेवा निवृत्त होकर इस समय वे पुरी (ओड़िशा) में रहते हैं.

जितनी जल्दी लौट जाऊं अच्छा होगा

जितनी जल्दी लौट जाऊं अच्छा होगा
उठा हुआ है पांव
पर बुलावा नहीं आया.

वैसे तो मेल किये हैं दोस्तों ने
प्रेमिकाओं ने फोन कॉल
ऊंचे अधिकारियों ने चिट्ठियां भेजी हैं
हर एक संदेश में बात एक ही,
लौट आओ जल्दी
पर हर एक में है शर्त
लौट कर क्या-क्या करना है.

एक निःशर्त जीवन की खोज में
घूमते-घूमते लौट नहीं पा रहा,
वचन दिया है लौटने का
निभा नहीं पा रहा.

आते हुए सोचा था जल्दी लौटूंगा
काम वहां कितने सारे बाकी पड़े हैं
पर आने के बाद यहां
फंस गया हूं ऐसी माया में
कि भूल गया, लौटना भी है,
जहां से शुरू किया था चलना.

आने-जाने का तो कोई होता नहीं लेखा-जोखा,
पहले भी नहीं था,
मेरे साथ आये थे जो लोग सारे
हो सकता है लौटने की बेला में
वे न हों मेरे साथ,
हो सकता है फिर से जब आऊं
तब हों कुछ नये साथी,
पूछ रहे हों
अपना-अपना पता और परिचय.

इस तरह बदल जाते कितने सारे पते
ठीक लौटने की बेला में,
फिर भी यात्रा जारी रहती
लगातार.

सुनो, कोई बुला रहा है दरवाजे पर
शायद वही आया है
बिना शर्त लौटने का बुलावा लेकर
चलो दरवाजा खोलें
और उससे बात कर लें.

रंग बिरंगे कपड़े

डॉ. हेमंत कुमार

एक गांव के बाहर खेत में एक सियार रहता था. सियार के साथ उसके दो बच्चे भी रहते थे. एक बार खेत का मालिक किसान खेत जोतने के बाद अपने कुछ कपड़े वहीं भूल गया. किसान के कपड़े सियार को मिल गये. सियार ने कपड़े पहन कर देखे. किसान के कपड़े सियार के शरीर पर ठीक आ गये थे. सियार बहुत खुश हुआ. वह खुशी में जोर-जोर से हुआं-हुआं कर चिल्लाने लगा. सियार को कपड़े पहने देख कर उसके बच्चे भी कपड़े पहनने की जिद करने लगे. उसका छोटा बच्चा मचलता हुआ बोला,

'हुंआ हुंआ हुंआ हुंआ हुंआ हुंआ हुंआ हुंआ.

मेरे बापू अच्छे बापू

कपड़े सुंदर पहने बापू

दिखते कितने प्यारे बापू

हम दोनों को ऐसे कपड़े

ला के दे दो प्यारे बापू.'

छोटे को देख उसके बड़े बच्चे ने भी जिद करनी शुरू कर दी. बच्चों की जिद देखकर सियार ने उन्हें बहुत समझाया कि कपड़े आदमी लोग ही पहनते हैं. पर सियार के बच्चे नहीं माने. वे और भी जिद करने लगे कि हमें किसान के बच्चों के कपड़े लाकर दो. उनकी जिद से परेशान होकर एक रात सियार कपड़े लाने के लिए गांव की तरफ चल पड़ा. वह बहुत धीरे से गांव में घुसा. वह धीरे-धीरे चलता हुआ किसान के घर में घुस गया. आंगन में उसे किसान के बच्चों के कपड़े दिखायी पड़े. वह चुपके से कपड़े उठा कर खेतों की तरफ भाग गया.

अल्का दीक्षित

किसान के बच्चों के कपड़े पहन कर सियार के बच्चे खुश हो गये. वे खुशी में नाचने और गाने लगे. दोनों बच्चों ने घूम-घूम कर हर सियार को अपने कपड़े दिखलाए. हर जानवर को अपने कपड़े दिखलाए. सभी ने उनके कपड़ों की तारीफ की.

धीरे-धीरे सियार और उसके बच्चों के कपड़े गंदे होने लगे. कुछ दिनों बाद उनके कपड़े एकदम गंदे हो गये. फिर भी वे उनको पहने रहते थे क्योंकि उनके पास पहनने के लिए दूसरे कपड़े तो थे नहीं, न ही वे कपड़ों को साफ करना जानते थे. गंदे कपड़े पहनने से सियार और बच्चों के शरीर में खुजली होने लगी. जब उनकी खुजली बहुत

बढ़ गयी तो वे भागेभागे डाक्टर भालू के पास गये. सियार ने भालू से अपनी व बच्चों की समस्या बताई. वह अपना शरीर बुरी तरह खुजलाता हुआ बोला,

'भालू भाई भालू भाई,

बात सुनो तुम भालू भाई

किसान के कपड़े हमने पहने,

अल्का दीक्षित

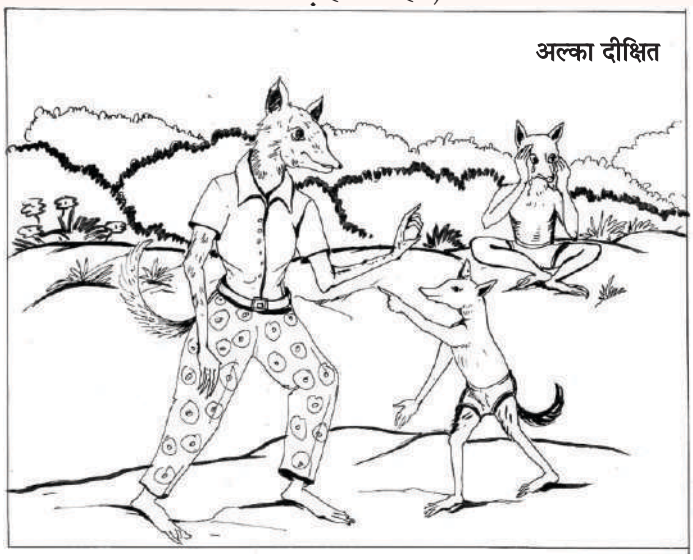

रंग बिरंगे कपड़े पहने,
शरीर में खुजली होती है,
हरदम खुजली होती है
जल्दी से कोई उपाय बताओ,
हमको इस आफत से बचाओ.'

सियार की बात सुनकर डाक्टर भालू खूब हंसा और उसे समझाता हुआ बोला,

'सियार राम, सियार राम,
मूरख तुम हो सियार राम
किसान के तुमने कपड़े पहने,
रंग बिरंगे कपड़े पहने
पर कपड़े कितने गंदे हैं,
आफत के ये पुलिंदे हैं,
खुजली तुमको होगी ही,
जब कपड़े तुम्हारे गंदे हैं.'

डाक्टर भालू की बात सुनकर सियार रोने लगा. वह उससे बोला, ''भालू भाई आप इस खुजली से बचने के लिए कोई दवा तो हमें दीजिए.''

भालू ने कहा, ''देखो भाई सियार राम, इस खुजली की तो बस एक ही दवा है.''

'कौन सी दवा भालू भाई?' सियार अपना शरीर खुजलाता हुआ बोला.

'तुम इन कपड़ों को उतार कर साफ कपड़े पहनो और अपने कपड़ों को रोज़ साफ

किया करो. साफ कपड़े पहनोगे तो खुजली कभी नहीं होगी.' भालू ने उसे समझाया.

'पर भालू भाई अबकी बार मैं कपड़े लेने गया तो किसान मुझे मार ही डालेगा.' सियार उदास होकर बोला.

'अरे भइया किसने कहा है कि तुम कपड़े पहनो. कपड़े तो आदमी पहनते हैं क्योंकि वे उसे साफ करना जानते हैं और सिलना भी. तुम इन कपड़ों को उतार कर फेंक दो और नदी में नहा लो. तुम्हारी खुजली ठीक हो जाएगी.' भालू ने उसे फिर से समझाया.

सियार बहुत ध्यान से भालू की बातें सुन रहा था. उसकी समझ में भालू की यह बात आ गयी. उसने अपने और बच्चों के शरीर से गंदे कपड़े निकाल फेंके. फिर तुरंत जाकर नदी में खूब नहाया. उसके बच्चों ने भी शरीर की खूब सफाई की. उनकी खुजली ठीक हो गयी. वे फिर आराम से उसी खेत में रहने लगे. ■

SELLING

BUYING

OR

"Making your REALTY dreams a REALITY"

PROVIDING PREMIUM SERVICE IN REAL ESTATE

Dharmendra Gomber

Mobile: 0212318123

DDI: 2155767

Neeta Gomber

Mobile: 0211001256

Email: d.gomber@barfoot.co.nz

BARFOOT & THOMPSON

LICENSED REAA 2008

BLOCKHOUSE BAY

(09) 627 8325

UNLOCK
YOUR FINANCIAL POTENTIAL
with Global Finance

global finance
your best interest since 1999

Winner of 50+ industry awards

We're the Piece that allows you to navigate Your Finances with Ease and Provide Comprehensive Solutions for Mortgages, Personal Risk Insurance, Business, and Commercial Loans.

Join Global Finances' referral campaign for a chance to win a share of $4000 worth of travel! This is your opportunity to travel, create unforgettable memories and share amazing experiences with your loved ones.

The first prize is a whopping $2500 worth of travel, the second prize is $1000 worth of travel, and the third prize is $500 worth of travel.

Not only are you entered to win a share of the prize pool, if your referrals convert to successful for GFS business, you'll also receive $250 for every referral*.

HOW CAN YOU PARTICIPATE?

Its easy! Simply refer Global Finance to your friends and family before 30th November 2023. The more people you refer, the higher your chances of winning.

Contact:

NORTH SHORE BRANCH

9C Apollo Drive, Rosedale

P | 09 255 5591
M | 027 755 5531

E | info@globalfinance.co.nz
W | www.globalfinance.co.nz

1st PRIZE	2nd PRIZE	3rd PRIZE	
$2500 travel gift card	$1000 travel gift card	$500 travel gift card	$250 per *Referral per Customer T&C's apply

प्रवासी प्रेम पब्लिशिंग प्रा.लि., भारत

(एम.एस.एम. ई.,भारत सरकार के अंतर्गत पंजीकृत)

बहुभाषी प्रकाशन संस्थान

- *हिंदी, अंग्रेजी सहित सभी भारतीय भाषाओं में गुणवत्तापूर्ण पुस्तकों के प्रकाशक*
- *भारत की विभिन्न आदिवासी और लोक-बोलियों में अनुवाद का कार्य*
- *लेखकों को रायल्टी के भुगतान का प्रावधान*
- *पुस्तकों के व्यापक प्रचार-प्रसार व बिक्री की व्यवस्था*
- *विदेश में रहने वाले प्रवासी लेखकों के लिए विशेष योजनाएँ*

संपर्क

pravasiprempublishing@gmail.com

91-7827310876